

पद १७६

(राग: यमन जिल्हा - ताल: दीपचंदी)

सुनो एक ज्ञात है और तुम कहाँ हो। वो ही हो या उसी में हो।
कहाँ हो ॥ध्रु.॥ नहीं है ज्ञात वो मैं नहीं हूँ। तो क्या हो कौन हो
कैसे कहाँ हो ॥१॥ समझते हो अपने को मैं बंदा। खुदा के वास्ते
तुम ही खुदा हो ॥२॥ जो है सो है नहीं सो नहीं है। ये समझो या
न समझो है सो ही है ॥३॥